बरतन मांज कर पानी फैंकने गई तो रोजाना की तरह औरतों ने पूछा कि आज क्या खाया तो फिर उसने यही जवाब दिया 'बासी कुसी तर बासी।' उस दिन सेठ के बेटे ने नीचे उतरते हुए उसकी यह बात सुनली और मन में सोचने लगा अभी तो यह ताजा भोजन करके आई है फिर भी इसने दूसरो को बासी कुसी क्यों बताया। दूसरे दिन उसने माँ से कहकर खीर खाँड का भोजन बनवाया ।माँ, बेटा और बहू तीनों ने बड़ी प्रसन्नता से भोजन किया। बहू बर्तन मांजकर पानी को नीचे डालने गई तो पीछे–पीछे उसका आदमी भी गया ।आज भी हमेशा की तरह औरतों ने पूछा आज क्या खाया तो उसने वहीं जवाब दिया 'बासी कुसी तर बासी। 'उसके आदमी को बहुत गुस्सा आया ? आज तो मेरे सामने खीर खाण्ड का भोजन किया है फिर भी यह बासी कुसी बता रही है ।इसमें क्या रहस्य है ?

इस बात को समझने के लिए वह रात का इंतजार करने लगा। जब रात हुई और बहू कमरे में आई तो उसके आदमी ने पूछा की आज तूने खीर खाण्ड का भोजन किया फिर भी पड़ोसी औरतों को बासी कुसी क्यों बताया। तब बहू मुस्कराकर बोली की आपके दादा–परदादाओं की कमाई है, तो वह बासी कुसी हुई या नहीं। यह सुनकर उसने परदेस जाने की सोच ली तथा सुबह उठकर माँ से बोला माँ मैं कमाने के लिए परदेस जाऊँगा। माँ ने कहा अपने पास बहुत धन है। तुझे परदेस जाने की क्या आवश्यकता है। लेकिन बेटे के जिद करने पर माँ ने परदेस जाने की स्वीकृति दे दी। वह कमाने के लिए परदेस चला गया। वहाँ उसे एक सेठ के यहाँ नौकरी मिल गई, कुछ ही समय में वह सारा काम काज करने लग गया। सेठ अपना सारा कारोबार उसे सौंपकर स्वयं तीर्थ यात्रा करने चला गया।

इधर सास ने बहू से कह रखा था कि दीये की बुझावे तो चूल्हे की मत बुझाना और चूल्हे की बूझ जावे तो दिये की मत बुझाना ।लेकिन एक दिन दोनों अग्नि बुझ गई। तो बहू पड़ोस में अग्नि लेने गई। उसने देखा कि वहाँ पड़ोस की औरतें किसी माता का पूजन कर रही है ।यह देखकर उसने पूछा आप किस माता का पूजन कर रही हैं। मुझे भी बताओ कि यह किसका व्रत है तथा इसके करने से क्या फल होता है ?